हर्षकालीन मिथिला

शिव कुमार मिश्र*

साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि गौड़ के राजा शशांक को जयनाग ने मगध का महासामंत नियुक्त किया था। शशांक अपने अधिकार क्षेत्र को क्रमशः बढ़ाकर एक शक्तिशाली सम्राट बना। वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी था। उसके साम्राज्य के अधीन तीरभुक्ति भी था।[1] स्मरणीय है कि सातवीं सदी ई0 के पूर्वार्द्ध में कोशी नदी मिथिला एवं कामरूप की सीमा थी।[2] प्रसिद्ध विद्वान बुकानन के अनुसार कोशी, ब्रह्मपुत्र में मिलती थी। पूर्वी मिथिला की भूमि निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेख के द्वारा दान किया गया था। इसमें ही अंकित है कि इस भूमि की उत्पति कौशिकी नदी के द्वारा हुई। पूर्णिया कामरूप की राजधानी की पश्चिमी सीमा थी। अभिलेख से ज्ञात होता है कि छठी सदी में कामरूप के राजा महाभूति वर्मन ने मिथिला के पूर्वी भाग को जीत लिया था। इसी सदी के उत्तरार्ध में महासेन गुप्त ने कामरूप पर आक्रमण कर आधिपत्य बना लिया।[3] स्मरणीय है कि भास्कर वर्मन ने हर्ष की सहायता से शशांक को परास्त कर इस क्षेत्र को अपने अधीन कर लिया एवं कर्ण-सुवर्ण में विजयोत्सव पर प्रसिद्ध निधनपुर ताम्रपत्र अभिलेख खुदवाया। भास्कर वर्मन द्वारा मिथिला के एक भाग पर शासन किया जाना इन तथ्यों से प्रमाणित हो चुका है, तथा कहा जाता है कि उसने वहीं से चीनी दूत बांग-हुएन-सी की मदद की थी।[4]

शशांक की मृत्यु के बाद अव्यवस्था एवं संकट का संक्रमण काल आया। हर्षवर्धन ने अपनी शक्ति का विस्तार मिथिला तक किया। प्रसिद्ध चीनी

---

* डॉ. शिव कुमार मिश्र, ग्रा.+पो.- शतघरा, वाया- बाबूवरही, मधुबनी।

1. राधाकृष्ण चौधरी, **हिस्ट्री ऑफ बिहार**, बनारस, 1958, पृ. 75.
2. **दि जर्नल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री**, त्रिवेन्द्रम, 11, 131.
3. अफसद प्रश्तर लेख।
4. राधाकृष्ण चौधरी, उपरिवत, पृ. 75-76.

यात्री ह्वेन-सांग के अनुसार उसने पंचगौड़ों को अपने शासनाधीन किया। पंचगौड़ों में मिथिला या तिरहुत भी सम्मिलित था। हर्षवर्द्धन के नियंत्रण में मिथिला, बज्जि आदि था। उसने उत्तर भारत के राजाओं को दण्डित किया एवं 641 ई0 में मगधराज की पदवी धारण किया।[5] ह्वेन-सांग ने 635 ई0 में वैशाली, पूर्णियाँ आदि का भ्रमण किया था जो उस समय महत्वपूर्ण नगर था। हर्षवर्धन ने मिथिला पर शासन करने के लिए अर्जुन को नियुक्त किया था। हर्ष के निधन के पश्चात उसके साम्राज्य में अव्यवस्था फैल गयी एवं अनेक छोटे-छोटे राज्यों में वह विभक्त हो गया।[6]

विभिन्न श्रोतों से ज्ञात होता है कि हर्ष के पश्चात अर्जुन ने स्वयं को मिथिला का स्वतंत्र शासक घोषित कर लिया। चीनी अभिलेख के अनुसार हर्ष के मृत्योपरांत अर्जुन या अरूणाश्व ने चीनी दूत वांग-ह्वेन-त्से को अपमानित किया। फलस्वरूप वह नेपाल भाग गया एवं तिब्बती राजा स्त्रोंग-चेन-गम्पों द्वारा प्रदत्त 1200 तिब्बती सैनिकों के साथ लौट आया जिसकी सहायता के लिए नेपाल के राजा ने भी 7000 अश्वारोही सैनिकों को भेजा। उक्त सम्मिलित सेना ने मिथिला के हिराहाती[7] नामक स्थान में अर्जुन की सेना के साथ घमासान युद्ध किया जिसमें अर्जुन की पराजय हुई एवं वह बंदी बनाकर चीन ले जाया गया। उक्त चीनी दूत की आर्थिक सहायता भास्कर वर्मन ने भी की थी।[8] किन्तु उक्त विवरण को इतिहास सम्मत मानना कठिन प्रतीत होता है। अकारण चीनी दूत के प्रति अर्जुन ने दुर्भावना क्यों रखी होगी एवं आठ हजार सैनिकों के द्वारा तीरहुत विजय की घटना अविश्वसनीय प्रतीत होता है।[9]

हर्षकालीन मिथिला की राजधानी के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं

---

5. हैवेल, **आरियन रूल आफ इंडिया**, पृ 191; एस. बील, **दी लाईफ आफ ह्वेन-त्सांग**, लंदन, 1911, पृ. 256-57.
6. राधाकृष्ण चौधरी, उपरिवत, पृ. 76.
7. भी. ए. स्मिथ, **देवकर**, पृ. 304; त्सेपन डब्ल्यू. डी. सकपा, तिब्बतः **ए पोलिटिकल हिस्ट्री**, येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1973, पृ. 28.
8. रमाशंकर त्रिपाठी, **हिस्ट्री आफ कन्नौज**, बनारस, 1973, पृ. 189-90; **दि जर्नल ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल**, कलकत्ता, 6, 69.
9. रमेशचंद्र मजुमदार, **हिस्ट्री आफ बंगाल**, पटना, 1971, पृ. 92.
10. योगेन्द्र मिश्र, **श्वेतपुर की खोज और उसका इतिहास**, पटना, 1981.

है। योगेन्द्र मिश्र ने वैशाली जिले के चेचर गाँव की पहचान ह्वेन-त्सांग (शी-फेई-तो-पोलो) के श्वेतपुर से की है तथा इसे 500 ई0 से 1200 ई0 तक मिथिला की राजधानी माना है।[10] चेचर गंगा के उत्तरी तरफ बसा एक गाँव है जो देसरी थाना के अन्तर्गत है। सुभद्र झा ने इसकी पहचान की प्रमाणिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाया है। उपेन्द्र ठाकुर के अनुसार ऊपर वर्णित विचार निराधार एवं तथ्यहीन है क्योंकि गुप्तकाल में तीरभुक्ति प्रान्त की राजधानी वैशाली थी तथा यह राजवंश के एक राजकुमार के लिए सुरक्षित रहती थी। गुप्तों के पतन के पश्चात तिरहुत के शासकों एवं राजधानी के विषय में कोई स्पष्ट चित्र उभर कर हम लोगों के समक्ष नहीं आता है। हर्ष के समय में यह पंचगौड़ों के अधीन एक प्रान्त था। हर्ष की मृत्यु के बाद उसका प्रान्तपाल स्वतंत्र शासक बन गया जिसे तिब्बती आक्रमणकारियों ने परास्त किया। इस प्रकार मिश्र की यह धारणा तथ्य से परे एवं बिना जांच पड़ताल किया हुआ जल्दीबाजी में लिया गया निर्णय है।[11]

ह्वेन-त्सांग के अनुसार पंचगौड़ों का शासन हर्ष के सीधे प्रशासन द्वारा किया जाता था। इन पंचगौड़ों में मिथिला भी एक था। देवहुति का कहना है कि यह मानना कठिन है कि प्रशासनिक दृष्टिकोण से हर्ष के साम्राज्य का कोई विभाजन हुआ था।[12] हर्ष ने तीरहुति या मिथिला पर शासन करने के लिए अर्जुन या अरूणाश्व को गवर्नर (प्रान्तपाल) नियुक्त किया था।[13] **हर्षचरित** के अनुसार हर्ष की राजधानी के दूरवर्ती प्रदेश विभिन्न प्रान्तपालों के अधीनस्थ थे।[14] ये प्रान्तपाल सामन्त एवं महासामन्त कहलाते थे। गुप्त साम्राज्य में जिस प्रकार भुक्तियों एवं विषयों का विभाजन था उसी प्रकार हर्ष के साम्राज्य का भी विभाजन भुक्तियों तथा विषयों में था। तीरभुक्ति अथवा तीरहुति या मिथिला एवं उसके निकट स्थित वैशाली का स्थान भी हर्ष के समय में अवश्य ही प्रधान भुक्तियों में रहा होगा। सातवीं सदी में चीनी यात्री वांग-हुएन-से ने 'टी-ह-लो' प्रदेश का नामांकन किया है। 'टीह-लो' से उसका मतलब संभवतः

---

11. उपेन्द्र ठाकुर, **हिस्ट्री आफ मिथिला** (द्वितीय संस्करण), दरभंगा, 1988, पृ. 158-59.
12. डी. देवहुती, **हर्ष** (द्वितीय संस्करण), दिल्ली, 1983, पृ. 223.
13. राधाकृष्ण चौधरी, उपरिवत, पृ. 76.
14. **हर्षचरित**, (सं.) ए. ए. फुहरर, बम्बई, 1909, पृ. 316.

तीरभुक्ति अथवा तिरहुत से था।[15] भुक्ति, 'उपरिक' के द्वारा शासित होता था। जिसकी नियुक्ति सम्राट करता था तथा वह उनके प्रति उत्तरदायी होता था। भुक्ति के प्रान्तपाल भोगिक, भोगपति, गोप्त, उपरिक, महाराज और राजस्थानीय भी कहे जाते थे।[16] भुक्ति अनेक जिलों या विषयों में विभक्त थे। विषयों के प्रधान विषयपति कहलाते थे। उनकी नियुक्ति भुक्ति के प्रान्तपाल करते थे। इनका कार्यालय जिला के प्रधान शहर 'अधीष्ठान' में होता था जो अधिकरण कहलाते थे।[17] इस कार्यालय में 'पुस्तपाल' नामक एक कर्मचारी संचिकाओं की देखभाल के लिए नियुक्त होता था।[18] भूमि संबधी कार्यों की देख-रेख के लिए अक्ष-पटलिक होते थे। **अमरकोष** के अनुसार 'अक्षदर्शक' एक कानून अधिकारी था जो संभवत: प्राड्-विवाक का पर्यायवाची था। 'अक्ष-पटलिक' नामक अधिकारी जिला में अनेक होते थे। ग्राम संबधी कार्यों की देखरेख के लिए 'ग्राम अक्ष-पटलिक' होते थे जो जिला एवं केन्द्र की कड़ी के रूप में काम करते थे। जिला स्तर पर न्यायालय होता था, न्यायाधिकरण, धर्माधिकरण और धर्मशासनाधिकरण नामक कार्यालयों की मुहरें वैशाली से प्राप्त हुई है।[19] प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई ग्राम थी। ग्रामीणों की मुख्य पेशा कृषि थी; इसके अतिरिक्त पशुपालन, बुनाई, बर्तन-निर्माण, काष्ठकर्म, धातुकर्म आदि ग्रामिणों द्वारा किया जाता था। ग्राम के प्रधान अधिकारी 'ग्रामेयक' या 'ग्रामाध्यक्ष' होता था, जो ग्राम प्रशासन का प्रभारी होता था। परम्परानुसार ग्रामीणों के विचार से तथा सरकारी स्वीकृति के अनुसार उनकी नियुक्ति की जाती थी।[20] ग्रामाध्यक्ष की सहायता के लिए अनेक कर्मचारी होते थे। हर्षचरित में इनके प्रकारों का

---

15. **जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी**, पटना, 1951, पृ. 356; **इन्डियन ऐंटीक्वेरी**, बंबई, 1911, पृ. 11.
16. **इपिग्राफिया इन्डिका**, नई दिल्ली, X, नं. 7; **कारपस इन्सकृप्सनम इण्डिकेरम**, कलकत्ता, III, नं. 14.
17. उपरिवत, X, 130, XII, 193.
18. डी. देवहुति, उपरिवत, पृ. 226.
19. **इपि. इ.**, XI, 107; **आर्कोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया, ए. रि.** नई दिल्ली, 1913-14, **मेमायरस् आफ आर्कोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया**, नई दिल्ली, नं. 66, 52-53.
20. बेनी प्रसाद, **दि स्टेट इन एनसियेन्ट इण्डिया**, इलाहाबाद, 1928, पृ. 297.

वर्णन किया गया है।[21] इसमें महत्तर का भी वर्णन मिलता है।[22] ग्राम-प्रधान की समिति को ग्राम-जनपद भी कहा जाता था। इसके सदस्य प्राय: वृद्ध ग्रामीण होते थे।[23] ह्वेन-त्सांग के अनुसार हर्षकाल में किसानो एवं व्यापारियों पर हल्का कर लगाया जाता था! राजस्व का एक चौथाई भाग पदाधिकारियों, एक चौथाई भाग राजा एवं उनके भवन पर खर्च किया जाता था।[24]

हर्षकालीन मिथिला की सामाजिक दशा पूर्ववत् थी। वर्णाश्रम धर्म का वर्चस्व था। समाज में ब्राह्मणों का स्थान ऊँचा था। वे धार्मिक कार्यों के संपादन के लिए दान प्राप्त करते थे जो उनकी सामाजिक एवं आर्थिक शक्ति थी। धार्मिक उत्सवों के द्वारा वे शिक्षा प्रदान करते थे जिसके लिए वे 'अग्रहार' प्राप्त करते थे। काश्यप,[25] शांडिल्य,[26] वत्स, सावर्णि,[27] भारद्वाज आदि गोत्रों के ब्राह्मण समाज में निवास करते थे। अधिकतर ब्राह्मण वैदिक शिक्षा प्राप्त करते थे। उसी के आधार पर वे वाजस्नेयी एवं छान्दोग्य, दो भागों में विभक्त थे।[28] उनकी उपाधियाँ भट्ट, मिश्र, शर्मा, स्वामिन, उपाध्याय आदि थे। समाज में दूसरा स्थान क्षत्रियों का था जो शासन का कार्य देखते थे किन्तु इस काल में वैश्य ही शासक वर्ग थे जबकि समाज में इनका स्थान तीसरा था। अत: इन्हें क्षत्रियों के समान माना जाता था। समाज में शुद्रों की संख्या सर्वाधिक थी जो शिल्पी का काम वैश्य की तरह भी करते थे। ह्वेन-सांग के अनुसार शुद्र कृषक होते थे।[29]

हर्ष काल में वैशाली के स्थान पर कन्नौज राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया था, जिस कारण धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र भी कन्नौज ही था। वहीं बौध संघ का अधिवेशन हुआ था। मिथिला में अनेक धर्मों का प्रचलन

21. **हर्षचरित**, पृ. 203, अनु., पृ. 198; देवहुति, उपरिवत, पृ. 229.
22. उपरिवत, पृ. 212, अनु. पृ. 208, उपरिवत।
23. देवहुति, उपरिवत।
24. टी. वाटर, **युआन च्वांग्स ट्रेवेल इन इण्डिया**, लंदन, 1904-05, I, 176.
25. **जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी**, पटना, 11, 441-47, 1-17.
26. उपरिवत, 582, I, 11.
27. **इण्डियन एण्टीक्वेरी**, X, 112, 1-11.
28. **इपि. इ.**, X, 4, 49, XXIX, नं. 7, 1.38.
29. **जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी**, पटना, XXX, 11, 1-4.

था; ब्राह्मण धर्म उस काल में उत्कर्ष पर था। समाज में ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की पूजा होती थी। शक्ति के उपासक शाक्त कहलाते थे। शैव धर्म का भी प्रचलन था। वैदिक धर्म को पुनःस्थापित करने के लिए कुमारिल भट्ट एवं उद्योतकर आदि विद्वानों ने एक सफल अभियान आरंभ किया जिसमें बौद्ध धर्म को बड़ा धक्का लगा। मिथिला, काशी, प्रयाग आदि ब्राह्मण धर्म का केन्द्र माना जाता था। यही कारण था कि ह्वेन-त्सांग ने भारत को 'ब्राह्मण धर्म का देश' के रूप में वर्णन किया है।[30] वाणभट्ट ने भी कपिल, कणाद, उपनिषदों के अनुयायियों, शैवों एवं वेदान्तियों आदि का उल्लेख किया है।[31] हर्षकालीन मिथिला में बौद्ध धर्म का भी प्रचलन था किन्तु यह ह्रासोन्मुख था। 635 ई॰ में ह्वेंन-त्सांग ने तीरभुक्ति की यात्रा की थी। उस काल में बौद्ध धर्म पतनोन्मुख था एवं बौद्धों की संख्या नगण्य थी। ह्वेन-त्सांग के अनुसार वैशाली के तीन या चार बौद्ध संघों को छोड़कर सैकड़ों बौद्ध संघ या तो नष्ट हो गए थे या जीर्ण-शीर्ण हो गये थे एवं बौद्ध भिक्षुओं की संख्या भी बहुत कम थी।[32] यद्यपि धर्मकीर्ति जैसे महान प्रतिभाशाली बौद्ध प्रचारक धर्म प्रचार में लगे हुए थे किन्तु वे सफल नहीं रहे। इसका प्रमुख कारण था बौद्ध धर्म का सबल एवं तर्कपूर्ण खंडन। उस काल में कुमारिल एवं उद्योतकर के नेतृत्व में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार जोरों पर था। इस प्रकार वैदिक धर्म का प्रभाव बढ़ता गया एवं बौद्ध धर्म का प्रभाव घटता गया। इस तरह महान प्रतिभाशाली विचारक धर्मकीर्ति इतिहास के दौर को बदल नहीं सके एवं बौद्ध धर्म तीव्रगति से पतनोन्मुख होता गया।[33] इत्सिंग ने भी सातवीं सदी ई0 में मिथिला एवं वैशाली का भ्रमण किया था। उसने भी अपने समय के बौद्ध धर्म के यथार्थ व्यवहार पर प्रकाश डाला है।[34] इसके विपरीत वैशाली एवं पूण्ड्वर्धन में दिगम्बर जैन साधुओं की संख्या बड़ी मात्रा में थी। आचार्य रवि सेन रचित **पद्मचरित** में सातवीं सदी की धार्मिक अवस्था की जानकारी मिलती है। इसके अनुसार

---

30. रिज डेविड्स, **ट्रेवल्स आफ ह्वेन-त्सांग**, 2, पृ. 63-80.
31. हर्षचरित, (सं.) ए. ए. फहरर, पृ. 316, अथ तेषां ... कपिलै ...कणा दैरोपनिषदैरेश्वर ... शैवे...
32. टी. वाटर, उपरिवत, 2, पृ. 63.
33. उमेश मिश्र, **ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन फिलॉसफी**, इलाहाबाद, 1966, I, पृ. 485.
34. जे. ताकाकुसु, **इत्सिंग रिकार्ड आफ बुद्धिष्ट रिलीजन**, आक्सफोर्ड, 1896; राधाकृष्ण चौधरी, उपरिवत, पृ. 80-83.

हर्षवर्धन के शासन काल में वैशाली, मगध, मुंगेर, भागलपुर आदि में जैन ध र्म उन्नत अवस्था में था। तीर्थंकरों के मंदिर बनाए जा रहे थे तथा बहुत से जैन आचार्य इन धार्मिक स्थानों में धर्म प्रचार तीव्र गति से कर रहे थे।[35] इस प्रकार हम देखते हैं कि हर्षकालीन मिथिला की धार्मिक अवस्था उन्नत थी। शासक वर्ग धार्मिक कार्यो में अभिरूची रखते थे। ह्वेन-त्सांग के अनुसार राजस्व का एक चौथाई भाग धार्मिक क्रिया-कलापों एवं उपदेशकों पर खर्च किया जाता था।[36] इस प्रकार तत्कालीन मिथिला में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन तीनों धर्मों का प्रचलन कमोबेश अवस्था में था।

शिक्षा व्यवस्था उन्नत अवस्था में थी। वाणभट्ट जैसे प्रकांड पंडित हर्ष के राज्य में ही थे। शासन की ओर से उन्हें भरपूर सहायता प्रदान की जाती थी एवं राजस्व का एक चौथाई भाग विद्वानों पर खर्च किया जाता था।[37] शिक्षा का उद्देश्य धार्मिक एवं आध्यात्मिक उन्नयन था। विभिन्न धर्मों के अनुयायी शिक्षक अपने उपदेशों के द्वारा शिक्षा प्रदान करते थे। ह्वेन-त्सांग सातवीं सदी में एक आश्चर्यजनक भिक्षुओं के वर्ग से प्रभावित हुआ था। तत्कालीन समाज में धार्मिक शिक्षा का गहरा प्रभाव था। वे अपने मार्ग से किसी भी स्थिति में दिग्भ्रमित नहीं हो सकते थे चाहे उन्हें राजा एवं राजकुमारों के द्वारा कितनी ही आकर्षक उपहार एवं प्रतिष्ठा क्यों न दी जाती हो। सनातन शिक्षा एवं संस्कृति के उत्थान के कारण बौद्ध एवं जैन शिक्षा का पतन होता जा रहा था। इस काल में जाति प्रथा भी दृढ़तर होती जा रही थी। शिक्षा मुख्यत: ब्राह्मणों एवं अन्य उच्च वर्गों के लिए ही निदेशित थी।[38] समाज में शुद्र, अन्य जाति-बहिष्कृत लोग, जिनकी अन्तर्जातीय विवाह के द्वारा उत्पति हुई थी तथा अस्पृश्य एवं जनजाति के लोग पूर्णतया शिक्षा से प्रतिबंधित थे। बालविवाह प्रथा ने नारी शिक्षा को बहुत प्रभावित किया। यद्यपि शिक्षा कुछ निश्चित वर्ग के लोगों तक ही सीमित रही किन्तु महान सनातन शिक्षा एवं संस्कृति बाद के समय में भी

---

35. वी. पी. सिन्हा (सं.), **कम्प्रीहेन्सीव हिस्ट्री ऑफ बिहार**, पटना, 1974, I, पार्ट 2. 11, पृ. 457.
36. टी. वाटर, उपरिवत, I, 176.
37. उपरिवत।
38. एस. के. मैटी, **दि इम्पिरियल गुप्ताज एन्ड देयर टाईम्स**, नई दिल्ली, 1975, पृ. 201-2.

अक्षुण रहा जबकि विदेशी आक्रमणों का भी इसे सामना करना पड़ा।[39] हर्षकालीन मिथिला में अनेकानेक पण्डितों का प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने अपने दार्शनिक कृतियों के द्वारा भारतीय दर्शन को प्रभावित किया। महान तार्किक उद्योतकर ने लगभग 645 ई0 में **वात्सायनभाष्य** पर एक वार्तिक लिखा था।[40] उसने **न्यायवार्तिक** भी लिखा था। भारतीय दर्शन के क्षेत्र में कुमारिल भट्ट का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वे धर्मकीर्ति के समकालीन थे तथा उनका समय सातवीं सदी ई0 बताया गया है।[41] उन्होंने **जैमिनी सूत्र** पर **शवर-भाष्य** नामक टिप्पणी लिखी थी। वे कुमारिल भट्ट या कुमारिल मिश्र या स्वामिन के नाम से भी जाने जाते थे। ऐसा कहा जाता है कि वे एक मैथिल विद्वान थे जिनकी बहन की शादी महान मैथिल दार्शनिक मंडन मिश्र से हुई थी।[42] विद्वानों को धारणा है कि कुमारिल भट्ट मधुबनी जिला के भट्टपुरा नामक गांव के निवासी थे। यह ग्राम बाद में मीमांसा के भट्ट संप्रदाय के नाम से जाना गया। कुमारिल के समय में बौद्ध धर्म का काफी प्रभाव था किंतु इसके साथ साथ उसमें भ्रष्टाचार भी बढ़ गया था। कुमारिल ने अपने **श्लोकवार्तिक** एवं **तंत्रवार्तिक** नामक ग्रंथों में बौद्धों की कड़ी आलोचना की है। कुमारिल ने **बृहद्टीका** एवं **मध्यमटीका** की भी रचना की थी।[43] उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि विद्या के क्षेत्र में तत्कालीन मिथिला की स्थिति उन्नत अवस्था में थी। धार्मिक स्थल शिक्षा के केन्द्र माने जाते थे जहाँ धार्मिक कथाओं, उपदेशों आदि के द्वारा शिक्षा दी जाती थी। गुरू-शिष्य संबध पिता-पुत्रवत् था। बालकों का उपनयन के बाद विद्याध्ययन प्रारंभ कराया जाता था जिसके अन्तर्गत पाँच संस्कार कराये जाते थे। ये संस्कार थे विद्यारंभ, उपनयन, वेदारम्भ, केशांत एवं समावर्तन। इन संस्कारों के संपादन के बाद छात्र गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। छात्रों को अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी जिसमें वेद, वेदांत, उपनिषद्, इतिहास, पुराण, व्याकरण, दर्शन, शब्दविद्या, धातुविद्या, भूतविद्या, ज्योतिष, आयुर्वेद, मीमांसा, कला, साहित्य आदि मुख्य थे। **हर्षचरित** में भी उपनिषदों के अनुयायी,

---

39. उपरिवत, पृ. 202-3.
40. दासगुप्ता, **ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी**, कलकत्ता, 1932, I, पृ. 307.
41. उपरिवत, पृ. 370, 419-29; गंगा नाथ झा, **पूर्व मीमांशा एंड इट्स सोर्सेज**, बी. एच. यू., बनारस, 1942, पृ. 15-19.
42. गंगा नाथ झा, उपरिवत, एपेंडिक्स, 23.
43. बी. पी. सिन्हा, उपरिवत, पृ. 465.

धर्मशास्त्र के ज्ञाता, पौराणिकों, वैयाकरणों आदि का वर्णन मिलता है।[44] हर्ष बड़ा ही शिक्षा-प्रेमी था इसी कारण अपने राजस्व का एक चौथाई भाग वह शिक्षा पर व्यय करता था।

हर्षकालीन मिथिला की कला एवं संस्कृति के विषय में भी कुछ जानकारी मिलती है। आधुनिक खगड़िया जिले में गंगा नदी के तट पर कुछ कलाकृतियाँ पत्थरों के टुकड़ों से ढंके मिले हैं। ये कृतियाँ हिन्दू देवी-देवताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें गणेश, हरगौरी, पार्वती आदि की मूर्तियाँ मिली हैं। स्थानीय लोगों के द्वारा इस स्थान को चौरासी मुनि कहा जाता है किन्तु यहाँ की मूर्तियाँ अधिकतर विष्णु एवं उनके अनेक अवतारों की हैं।[45] वहाँ कृष्ण के जीवन से संबंधित कुछ दृश्य मिले हैं जो कलाकृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ये सभी कृतियाँ छठी एवं सातवीं सदी ई0 के प्रतीत होते हैं। इस स्थान से आठ कि.मी. पर कहलगाँव (भागलपुर) पड़ता है। यहाँ की कला बाद के सदियों तक भी विद्यमान रही परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि बाद के समय में इस प्रकार की निर्माण-कला पतनोन्मुख हो गयी।[46]

---

44. **हर्षचरित** (सं.) ए. ए. फुहरर, पृ. 316 : अथ तेषां... उपनिषदैरेश्वर... धर्म शास्त्राभिः पौरणिकै... शाब्दिकै...
45. एस. के. सरस्वती, **सर्वे आफ इण्डियन स्कल्पचर**, कलकत्ता, 1957, पृ. 21.
46. उपेन्द्र ठाकुर, उपरिवत, पृ. 585.

॥भूयात् प्रज्ञाभारती भूतये नः॥

Published under the patronage of the
Government of the State of Bihar

प्रज्ञा-भारती

अंक-IX

वर्ष-9

PRAJÑĀ-BHĀRATĪ

**THE JOURNAL OF
THE K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE, PATNA**

Chief Editor
Dr. Bijoy Kumar Chaudhary
Director
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna
Joint Editors
Dr. Vijoy Kumar
Research Fellow-cum-Assistant Director
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna
Dr. Anil Kumar
Research Fellow-cum-Assistant Director
K.P. Jayaswal Research Institute, Patna
Associate Editors
Dr.(Smt.) Atia Begam
Dr. Surendra Tiwari

**K. P. JAYASWAL RESEARCH INSTITUTE
PATNA
1999**